REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2019

# हिन्दी पत्रकारिता का वैश्विक महत्व

डॉ. मिरगणे अनुराधा जनार्दन

**प्रस्तावना :**

पत्रकारिता की महत्ता आज से नहीं, बल्कि प्राचीनकाल से है। १७४४ में सर्वप्रथम रुप से छपाई का कार्य हुवा। १७८० ई.में भारत के पहले समाचार पत्र बंगाल गजट की शुरुआत हुई। जिसका श्रेय जेम्स आंगसरस हिकी को प्राप्त हुआ। हिंदी पत्रकारिता की शुरुआत कोलकाता से हुई। हिंदी का पहला पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' पंडित जुगलकिशोर व्दारा ३० मई १८२६ को कोलकाता से प्रकाशित हुआ। आधुनिक काल में हिंदी पत्रकारिता समाज में विकास, लाभ आदि का महत्व लिए हुए है। हिंदी पत्रकारिता से हामारा तात्पर्य उस पत्रकारिता से है, जिसके माध्यम से भारतीय समाज के लोगों के भाव, विचार उत्साही आदि को जानने व समझेने का प्रयास किया जाता है। हिंदी पत्रकारिता सकारात्मक व नकारात्मक दोनों प्रकार की सोच पाठक के सम्मुख रखती है। हिंदी पत्रकारिता भारतीय समाज, संस्कृति, धर्म व मानवता की विशेषताओं को समाजिक करके सच्चाई का साथ देती है। यह समाज और मानव को जड से मजबूत करती है। हिंदी पत्रकारिता साहित्य को बोध के आधार पर जोडती है तथा इससे हमारा बौध्दिक विकास होता है।

दूरदर्शन का प्रारम्भ १५ सितंबर १९४९ को हुआ। दूरदर्शन का इतिहास बडा व्यापक है। दूरदर्शन शुरुआत में रेडियों से जुडा हुआ था। दूरदर्शन का प्रारंभ में नाम आकाशवाणी-दूरदर्शन रखा गया। पहले-पहल ऑल इंडिया रेडियों व्दारा खबरों को तैयार किया जाता था। इसे रेडियो समाचार के नाम से भी जाना जाता है। दूरदर्शन के प्रसारण में सबसे प्रमुख बात यह है कि इससे कार्यक्रमों को प्रस्तुत करने के लिए इस दिन भवानीप्रसाद मिश्र का कविता पाठ, पंकज मलिक के व्दारा गीत और राजस्थानी कठपुतलियों आदि कार्यक्रमों का सीधा प्रसारण हुआ। दूरर्शन के कार्यक्रमों के प्रसारण के लिए उस समय उतनी सुविधाएं नहीं थीं। ये कार्यक्रम पहले केवल एक साधारण स्टूडियों में ही तैयार किए जाते थे। पहले तकनीकी उपकरणों का भी अधिक प्रयोग नही होता था। एक साधारण कैमरे से ही फोटो शूट किया जाता था। दूरदर्शन के लिए आकाशवाणी के व्दारा विशेष चिन्ह (लोगो) तैयार कर प्रस्तुत किया गया। इसके प्रसारण को दिखाते हुए उस समय विशेष ध्वनि तैयार की गई और उस ध्वनि को बजाया गया। आकाशवाणी में सर्वप्रथम समाचार प्रस्तुत करने वाली महिला 'प्रतिमा पुरी' की आवाज में दूरदर्शन का शुभारंभ हुआ। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद ने दूरदर्शन का विधिवत उद्घाटन किया। धीरे-धीरे दूरदर्शन के कार्यक्रम में चित्रों के साथ-साथ जाने माने लोगों की फोटो व ऐतिहासिक स्थलों का ब्यौरा भी दिया जाने लगा। इसी सूचना के आधार पर य खबरे तैयार की जाती थी। १९८२ में एशियाड खेलों के आयोजन के दौरान दूरदर्शन को रंगीन रुप में प्रस्तुत किया गया। भारत में रंगीन टी.वी. की शुरुआत हो चुकी थी। दूरदर्शन के पूर्व डायरेक्टर शिवकुमार शर्मा के अनुसार एशियाड के अच्छे प्रसारण के लिए पाँच ओबी वैन, बीस कैमरे, नौ सदस्यों की टीम भेजी गई। १९८२ में जब एशियाड खेलों का प्रसारण हुआ, उस समय ९०० टीमों ने कार्य किया। इस प्रसारण को देख लोग आश्चर्यचकित होने के साथ-साथ खुश भी हुए। ऐसा अनोखा प्रसारण देखकर लोक तारीफ किए बिना न रह सके। उस समय केवल उच्च वर्ग के पास ही यह सुविधा प्राप्त थी। साधारण व्यक्ति टेलीविजन लेने में असमर्थ था।

दूरदर्शन का नाम सुनते ही हमारे मन में श्याम-श्वेत रंग के चित्र सामने आ जाते है। आज से करीब २०-२२ वर्षो पहले दूरदर्शन की बात कही जाए दूरदर्शन के प्रति लोगों का आकर्षण देखते ही बनता था। दूरदर्शन पर अनेक प्रकार के नूतन कार्यक्रमों का विस्तार हुआ, जिसमें शिक्षा समबन्धी, मनोरंजन, साक्षात्कार आदि कार्यक्रम दिखाए गए। दर्शकों में दूरदर्शन के प्रति आकर्षण इतना अधिक कि इन कार्यक्रमों के लिए वे सब कुछ त्याग देते थे। दूरदर्शन पर जब चित्रहार का समय होता था, तो सभी लोग समय से पहले अपना कार्य खत्म कर लेते थे। आधे घंटे के इस कार्यक्रम को दर्शक बहुत उत्साहपूर्वक देखते थे।

दूरदर्शन के सभी कार्यक्रमों को पूरे परिवार के साथ बैठ कर देखा जा सकता था। दूरदर्शन ने समय के साथ-साथ भारतीय जीवन मूल्यों से संबंधित कार्यक्रम भी दिखाए।

बदलते समय के साथ-साथ दूरदर्शन के कार्यक्रमों में नवीन तकनीकी माध्यमों का प्रयोग होने लगा। दूरदर्शन के कार्यक्रमों में उसक प्रस्तुतीकरण पर ज्यादा ध्यान दिया जाने लगा। दूरदर्शन का समाज के प्रति जो उत्तरदायित्व था वह इन कार्यक्रमों के जरिए सिध्द हुआ। दूरदर्शन में इन कार्यक्रमों के प्रस्तुतीकरण का एक मात्र लक्ष्य जनता को उनके अधिकारों –कर्तव्यों की जानकारी देना, जागरुकता लाना, साक्षात्कार करना, भारतीय जीवन मूल्यों के प्रति नवीन सोच पैदा करना आदि था। इन कार्यक्रमों के माध्यम से यह सिध्द हुआ कि समाज में धारावाहिक में अंधविश्वासों व कुरीतियों का विरोध किया गया। इस धारावाहिक के माध्यम से लडकी को पढाने एवं नौकरी से संबंधित सोच में जो परिवर्तन आया, अससे नवीन मूल्यों की स्थापना हुई। 'पल्स-पोलियो' अभियान के व्दारा आम जनता को जागरुक किया गया। दो साल से पांच साल तक के बच्चों को 'दो बूंद जिंदगी की' दी जाने लगी। धारावाहिक रजनी के माध्यम से अपने अधिकारों के प्रति जनता को जागरुक किया गया। 'सर्वशिक्षा अभियान' के जरिये लोगों को शिक्षा का महत्व बताया गया, लडकियों को शिक्षित करने के लाभ बताये गए। 'सब पढें, सब बढे, इसी भाव का द्योतक है। दहेज, पर्दाप्रथा, बाल-विवाह आदि कुरीतियों के होने से समाज कैसे पीडित है, इन विसंगतियों से कैसे छुटकारा पाया जाए। 'निर्मला' धारावाहिक व अन्य धारावाहिकों के माध्यम से समाज में जागृति लाई गई। कन्या भ्रूण हत्या का विरोध कर समाज में 'बेटी बचाओ' का नारा दिया। दूरर्शन पर लंबे समय से 'कृषि दर्शन' में कृषि संबंधी जानकारी देकर किसानों की समस्योओं का दूर करने का प्रयास किया जाता है। यही विश्व का सबसे लंबा चलनेवाला कार्यक्रम है।

भारतीय जीवन मूल्यों के संरक्षण हेतू कई नए कार्यक्रमों की भी शुरुआत दूरदर्शन पर हुई। दूरदर्शन पर इन धारावाहिकों के माध्यम से भारतीय जीवन मूल्यों के प्रति आस्था को स्थापित किया गया जैसे 'हम-लोग', 'बुनियाद', 'ये जो है जिंदगी' में पारिवारिक ताने' बाने के माध्यम से लोगों के भीतर कुरीतियों के प्रति आक्रोश, दुखी जन के प्रति संवेदना, मानव मूल्यों के प्रति वश्वास की भावना ने जन्म लिया। प्रत्येक रविवार को दिखाई जानेवाली हिन्दी फीचर फिल्म का दर्शक बडी बेसब्री से इंतजार करता है। २००४ के आस-पास दूरदर्शन ने एक नए रुप में फिल्म बाइस्कोप का आयोजन किया। इसमें एक फिल्म हफते में तीन दिन दिखाई जाती है। सोमवार, मंगलवार, बुधवार को रात ११.०० बजे एक घंटे के धारावाहिक के रुप में इसका प्रसारण किया जाता है।

दूरदर्शन में ऐतिहासिक- सांस्कृतिक धारावाहिकों को काफी पसंद किया गया। इन पौराणिक धारावाहिकों में 'रामायण', 'महाभारत' का भी इतना प्रभाव था कि जब ये धारावाहिक प्रसारित होते थे, तो सडके सूनसान हो जाती थी। ऐसे ही अन्य धारावाहिक टीपू सुल्तान, चन्द्रगुप्त, भारत एक खोज, मैं दिल्ली हूँ आदि में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में घटित घटनाओं की तथ्य सहित जानकारी दी और हमारे बौध्दिक विकास को बढाया।

दूरदर्शन के इतिहास में साहित्यिक धारावाहिकों का भी बडा महत्व है। समाज में जो कुछ भी घटित हो रहा है। उसकी प्रतिच्छाया साहित्य रुपी दर्पण में दिखाई पडती है। प्रेमचंद, श्री लाल शुक्ल, बंकिमचन्द्र चटर्जी, शरदचंद्र चटोपाध्याय आदि व्दारा रचित उपन्यासों का नाट्य रुप दूरदर्शन पर दिखाया गया, जिसमें समाज में उत्पन्न किसानों की दुर्दशा, नवीन मूल्यों की स्थापना, कुरीतियों, विसंगतियों के विरोध को चित्रित किया गया। आज भी दूरदर्शन एकमात्र ऐसा चैनल है जिस पर साहित्यिक समारोह, संगोष्ठी, लोकार्पण आदि की सूचनाएं पत्रिका कार्यक्रम के माध्यम से दी जाती है।

समग्रतः कहा जा सकता है कि दूरदर्शन भी हिंदी पत्रकारिता का एक इलैक्ट्रॉनिक माध्यम है, जो देश-विदेश में घटित घटनाओ, राष्ट्रीय आयोजनों, संसदीय कार्यवाही, चुनाव, खेल आदि का विवरण तथा आवश्यकतानुसार सीधा प्रसारण दिखाता है। क्षत्रीय भाषाओं, पर्वो खेलों, मनोरंजन आदि से संबंधित सभी जानकारी समयानुसार देता है। दूरदर्शन ने अपने विकास काल में जितनी उन्नति और सफलता पाई अन्य चैनलों ने केवल टीआरपी ही बढाई। दूरदर्शन ने अपने कार्यक्रमों के माध्यम से सुदूर भारत में भी अपना वर्चस्व स्थापित किया। दूरदर्शन के इस दौर में अनेक उपलब्धियां पाई और पा रहा हे। दूरदर्शन का प्रभाव आज भी समाज पर उतना ही है, जितना पहले था।